Childhood and Growing up

Q. स्वतन्त्रता के पश्चात भारत में स्त्री शिक्षा का विकास कैसे हुआ?

Ans स्त्री शिक्षा :→

भारत में मध्य और पुनर्जागरण काल के दौरान स्त्रियों को पुरुषों से अलग तरह की शिक्षा देने की धारणा विकसित हुई थी। वर्तमान दौर में यह बात सर्वमान्य है कि स्त्री को भी उतना शिक्षित होना चाहिए जितना भी पुरुष हो। शिक्षा वयस्क जीवन के प्रति स्त्रियों के विकास के लिए एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। शिक्षा अन्य अधिकारों को सुरक्षित करने के लिए लड़कियों और महिलाओं को सक्षम करने में महत्वपूर्ण है। महिलाएँ शिक्षा एक अच्छे समाज के निर्माण में मदद करती है।

आजादी के बाद सरकारी तथा गैर सरकारी संस्थाओं ने इस महत्व को समझते हुए नारी-शिक्षा को प्रोत्साहित करने का प्रयास किया।

भारत में स्त्री शिक्षा :→

वैसे ही स्त्रियों के लिए भारत में वैदिक काल से था। स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात सन 1947 से लेकर भारत सरकार ने पाठशाला में अधिक लड़कियों को पढ़ने का मौका देने के लिए अनेक योजनाएं बनाई है जैसे निःशुल्क पुस्तकें, दोपहर के भोजन आदि। कोलकाता विश्वविद्यालय महिलाओं को शिक्षा के लिए स्वीकार करने वाला पहला विश्वविद्यालय था।

भारत की स्वतन्त्रता के बाद सन 1947 में विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग को बनाया गया। आयोग ने सिफारिश की महिलाओं की शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार किया जाए।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

भारत सरकार ने तुरन्त ही महिला साक्षरता के लिए साक्षर भारत मिशन की शुरुआत की।

* विश्व विद्यालय आयोग के सुझाव →

1. शिक्षा के अवसरों में वृद्धि :→ आयोग के अनुसार नारी शिक्षा के स्तर को पुरुष शिक्षा स्तर तक लाने के लिए सरकार द्वारा ने महिलाओं के लिए शिक्षा के अवसरों में बढ़ोत्तरी करना शुरू कर दिया।

2. नारी के लिए इस प्रकार की शिक्षा व्यवस्था की जाए ताकि उनको समाज में समान दर्जा प्राप्त हो सके।

3. शिक्षा विभाग तथा यू.जी.सी. द्वारा महाविद्यालय के लिए शैक्षिक कार्यक्रम इस प्रकार तैयार किए जाए ताकि महिलाओं को भी सामान्य माहौल मिल सके।

4. लड़कियों को उनकी रुचि तथा दृष्टिकोण को ध्यान में रखते हुए उन्हें शिक्षा निर्देश दिए जाने चाहिए।

5. ऐसे सहशिक्षा केन्द्रों की स्थापना की जानी चाहिए जिसमें नारियों की जरूरतों को उतना ही महत्व दिया जाना चाहिए जितना की पुरुषों की जरूरतों का ध्यान दिया जाता है

6. लड़कियों के लिए जीवन सम्बन्धी उन सभी सुख - सुविधाएं उपलब्ध की जानी चाहिए जो लड़को के लिए उपलब्ध है

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

* कोठारी आयोग के सुझाव :→

1. प्राथमिक स्तर पर लड़कियों की शिक्षा की ओर विशेष ध्यान दिया जाए।

2. 1 से 3 वर्ष की पूर्व प्राथमिक शिक्षा दी जाए।

3 6 वर्ष पूरे होने पर ही पहली कक्षा में नामांकन किया जाए।

4 सभी बच्चों को प्राथमिकी कक्षाओं में मातृभाषा का ज्ञान करवाया जाए।

5 महिला अध्यापकों को विशेष सुविधाएँ दी जानी चाहिए

6 लड़कियों के लिए अंशकालीन कोर्स, व्यावसायिक कोर्स अलग विद्यालयों तथा छात्रावासों की व्यवस्था होनी चाहिए।

7 नारी-शिक्षा के पाठ्यक्रम का विकास किया जाए। गृह-विज्ञान लड़कियों के लिए वैकल्पिक विषय के रूप में रखा जाए।

8 लड़कियों की शिक्षा की व्यवस्था राष्ट्रीय समिति के सुझावों के अनुसार होनी चाहिए।

* राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 के सुझाव →

* शिक्षा की राष्ट्रीय प्रणाली के अन्तर्गत एक निश्चित स्तर तक सभी छात्रों को जाति, मत या लिंग के भेदभाव के बिना समान रूप से शिक्षा दी जानी चाहिए।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

2. 14 वर्ष की आयु तक बालकों को नि:शुल्क शिक्षा दी जानी चाहिए।

3 स्त्री निरक्षरता तथा प्रारम्भिक शिक्षा तक महिलाओं की पहुँच के मार्ग में आने वाली बाधाओं को दूर करने के कार्य को प्राथमिकता दी जानी चाहिए

4 स्त्रियों के जीवन के सुधार के लिए पूरा समय, समर्पण और बल देना चाहिए।

5. शिक्षा की गुणवत्ता में पर्याप्त सुधार पर जोर दिया जाएगा।

6. शिक्षा की राष्ट्रीय प्रणाली राष्ट्रीय पाठ्यक्रम ढाँचे पर आधारित होगी।

7 स्त्री शिक्षा के लिए अध्ययन का वातावरण बनाना चाहिए।

8 शिक्षा को केवल साक्षरता तक ही सीमित नहीं किया जाना चाहिए।

* स्त्री शिक्षा की राष्ट्रीय कमेटी के सुझाव →

1958 में श्रीमती दुर्गा बाई देशमुख की अध्यक्षता में इस कमेटी ने नारी शिक्षा के विकास एवं प्रसार के लिए कुछ महत्वपूर्ण सुझाव दिए।

(1) कमेटी ने नारी शिक्षा को प्रोत्साहित करने के लिए सुझाव दिया कि 6 से 10 साल तक की सभी लड़कियों के नामांकन का कार्य 1981 तक पूरा हो जाना चाहिए।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

2 आयोग के अनुसार नारी-शिक्षा की सफलता के लिए निजी संस्थाओं, अध्यापक संगठन और जनता आदि को पूरा सहयोग देना चाहिए

3. नि:शुल्क आवास एवं यातायात की व्यवस्था उन विद्यार्थियों के लिए करनी है जो या तो अलग-२ दूर दराज के क्षेत्रों या पिछड़े क्षेत्रों से सम्बन्ध रखते

4 शिक्षा जारी रखने की सुविधाएं
5 प्रौढ़ नारियों के लिए संयुक्त कोर्स
6 छात्रवृत्तियों की व्यवस्था

* शिक्षा की राष्ट्रीय नीति १९९२

* शिक्षा की राष्ट्रीय नीति -१९९२ के तहत स्त्रियों की शक्ति को बढ़ाने के लिए कई योजनाएं बनाई गई थी

* लड़कियों की शिक्षा का नि:शुल्क प्रबन्ध नवोदय विद्यालय तथा केन्द्रीय विद्यालयों में होना चाहिए।

* श्यामपट्ट अभियान योजना के अन्तर्गत जितने भी अध्यापकों की नियुक्ति होगी, उनमें से 50% महिला अध्यापक होनी चाहिए।

* अनौपचारिक शिक्षा के अन्तर्गत 90% सहायता NFE को केवल लड़कियों के लिए दी जानी चाहिए।

* सम्पूर्ण भारत में +२ स्तर के स्कूल शिक्षा के अंग के रूप में स्वीकार किया जाएगा।

* सम्पूर्ण साक्षरता अभियान पर अधिक जोर दिया जाएगा।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

* मुक्त अधिगम प्रणाली को सुदृढ़ किया जाएगा।

* अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद को सुदृढ़ किया जाएगा।

* परीक्षा संस्थाओं के दिशा-निर्देश के रूप में राष्ट्रीय परीक्षा सुधार प्रारूप तैयार किया जाएगा

* कार्यवाही का कार्यक्रम -1992 :- उक्त कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य लिंग अनुपात की जानकारी देना तथा उसकी समानता का प्रयास करना था। उसका यह भी उद्देश्य था कि महिलाओं को किसी भी क्षेत्र में राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय विकास के लिए प्रोत्साहित करना था।
उसके चार घटक इस प्रकार है।

1. स्त्रियों के विकास के लिए संस्थाओं की सीधी भूमिका
2. स्त्री और पुरुष की लिंग समानता के लिए वर्तमान मुल्यांकन विधि को बदलना।
3. लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए आधुनिक तरीकों को ढूँढना
4. अध्यापकों की सेरवलाई, निर्णय लेने वाले, योजना बनाने वालों द्वारा लिंग समानता लाने के लिए महत्वपूर्ण भूमिका अदा करना।

निष्कर्ष :- अतः हम कह सकते है कि स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात अनेक समाज सुधारकों तथा राजनैतिक लोगों ने नारी शिक्षा के महत्व पर जोर दिया था। जिसके कारण नारी शिक्षा प्रगति के मार्ग पर अग्रसर हुई लेकिन पुरुषों की शिक्षा प्रगति की तुलना में बहुत पीछे रह गई। नारी शिक्षा के बिना राष्ट्र कभी भी उन्नति नहीं कर सकता है।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

childhood and growing up

Q बाल्य अवस्था से आप क्या समझते हैं? बाल्य अवस्था के दौरान बालकों की शिक्षा हेतु किन बातों का ध्यान रखना अनिवार्य है?

Ans बाल्यअवस्था :→ शैशवावस्था के पश्चात् बच्चा जिस अवस्था में प्रवेश करता है उसे बाल्यावस्था कहते हैं। इस अवस्था की अवधि 5 वर्ष के बाद शुरू होकर 12 वर्ष तक की होती है। यह शैशव और किशोरावस्था के बीच की अवस्था होती है। इस अवस्था के दौरान एक बच्चे की शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक, सामाजिक और भाषा के विकास में गुणात्मक और मात्रात्मक विकास होता है। यह वही अवस्था होती है जब बच्चा अपने वातावरण पर नियंत्रण पाना सीखता है उनमें मानसिक स्थिरता भी आती है। इस अवस्था में बच्चा चलना, दौड़ना, कूदना और गेंद से खेलना सीखता है। इस अवस्था में ही बच्चा अच्छे और बुरे में अंतर करना शुरू कर देता है।

→ बाल्य अवस्था की परिभाषाएँ :→

* रॉस के अनुसार:→ बाल्य अवस्था मिथ्या परिपक्वता की अवस्था है।

* किलपैट्रिक के अनुसार:→ बाल्य अवस्था प्रतिद्वन्द्वात्मक सामाजीकरण का काल है।

* कॉल व क्रुस के अनुसार:→ बाल्य अवस्था जीवन का अनोखा काल है।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

(2)

PAGE No
DATE: / /201

बाल्यावस्था की मुख्य विशेषताएं

1. अपेक्षाकृत धीमी शारीरिक वृद्धि :→ बाल्यावस्था में वृद्धि प्रक्रिया शैशवावस्था से अपेक्षाकृत धीमी होती है। इस दौरान बच्चे की प्रतिरक्षा और प्रतिरोधक क्षमता तीव्र गति से विकसित होती है।

2. अवलोकन और प्रयोग के द्वारा सीखना :→ बच्चे ज्यादातर अवलोकन और अन्वेषण के द्वारा सीखते हैं। अवलोकन के द्वारा बच्चा पहली भाषा सीखता है। जिसे भाषा अर्जन कहा जाता है। (रोल मॉडल) और इसी के आधार पर वस्तुओं और चीजों के बारे में अपनी अवधारणाएं विकसित करते हैं।

3. अत्यधिक जिज्ञासा :- बच्चे अति जिज्ञासु व्यवहार प्रदर्शित करते हैं और उम्मीद करते हैं कि उनके सवालों का जवाब माता-पिता और शिक्षकों द्वारा प्राथमिकता के आधार पर दिया जाना चाहिए

4. शारीरिक गतिविधियां :→ इस अवस्था के दौरान बच्चे शारीरिक गतिविधियों में ज्यादा संलग्न होते हैं और उनसे लगातार सीखते रहते हैं। दिलचस्प रूप से बच्चे एक स्थान पर बैठना बहुत कम पसंद करते हैं क्रियाएं करते रहते हैं

5. संज्ञानात्मक क्षेत्र में तेजी से वृद्धि :→ बच्चे वस्तुओं की मानसिक अवधारणा विकसित करना शुरु

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

कर देते हैं। उनमें वस्तु स्थायित्व का गुण, आत्म-केंद्रिता का भाव, जीवात्मवाद (यह सोच की सभी वस्तुओं में जीवन होता है) और तार्किक विचारों से विकास की प्रक्रिया शुरू हो जाती है।

6. भाषा अर्जन और शब्दावली में वृद्धि :→ इस अवस्था में बच्चा भाषा सीखने और कई प्रकार की उक्ति क्रिया एवं अनुभव के परिणाम स्वरूप सीखा जाता है। चोम्स्की का दावा है कि बच्चे भाषा अर्जन उपकरण और सार्वभौमिक व्याकरण के साथ पैदा होते हैं। ये सिद्धान्त सिद्ध करते हैं कि भाषा सीखने और शब्दावली में वृद्धि के लिए बचपन, जीवन का महत्वपूर्ण चरण होता है।

7. लिंग में अंतर :→ इस अवस्था के दौरान बच्चे जैविक विशेषताओं के आधार पर लिंग के बीच अंतर करना सीख जाते हैं कौन लड़का है और कौन लड़की है उनके हाव-भाव से उनके कपड़ों को देखकर अंतर करना सीख जाता है।

8. युक्तिसंगत विचार प्रक्रिया :→ जो बचपन के शुरुआती दौर में कम तर्कसंगत होती है जबकि इस अवस्था में बच्चा तर्कसंगत के विकास की ओर बढ़ता चला जाता है इस बात का अंदाजा बच्चे द्वारा बड़ों से पूछे गए तार्किक प्रश्नों आदि।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

PAGE No
DATE: / /201

इन्द्रियों का विकास ! →

स्वाद, और घ्राण सम्बन्धी दृष्टि, स्पर्श, श्रवण इन्द्रियों का विकास नए स्तर पर पहुँच जाता है।

II. सामाजिक - भावनात्मक विकास ! →

भावनात्मक विकास कुछ महत्वपूर्ण सामाजिक - आयामों जैसे स्व (मैं कौन हूँ) लिंग और नैतिकता (सही और गलत या अच्छे और बुरे के बीच अंतर का ज्ञान) के इर्द-गिर्द घूमता है ये आयाम व्यक्ति की पहचान बनाने और व्यक्तित्व विकास की प्रक्रिया की शुरुआत करते हैं।

III प्रत्यक्षणात्मक विकास ! → ये वो मनोवैज्ञानिक प्रक्रियाएं होती हैं। जिनमें

मानव मस्तिष्क इन्द्रियों के माध्यम से प्राप्त सूचना को संसाधित करता है। बच्चा अग्रभूमि और पृष्ठ भूमि तथा आकार और आकार में स्थिरता के बीच के संबंधों को सीख लेता है।

IV. नैतिकता का विकास ! → बाल्यकाल के उत्तरार्द्ध में बालक में नैतिकता

का विकास होने लगता है। उनमें सही व गलत के प्रति दृष्टिकोण स्पष्ट! ही पनपने लगते हैं वह नैतिक आचरण के विषय में सोचने लगता है और वे सभी कार्य जिन्हें नैतिक रूप से समाज स्वीकार नहीं करता, उन्हें करने से बचने लगता है।

13 कल्पना व स्मरण शक्ति :- इस आयु वर्ग में कल्पना व स्मरण शक्ति का पर्याप्त विकास हो जाता है उनमें रचनात्मक कल्पना शक्ति विकसित हो जाती है वह हर समय कुछ न कुछ बनाने का प्रयास करता रहता है।

14 आदर्शवादी दृष्टिकोण :→ इस अवस्था में बालक संसार की सच्चाइयों को धीरे-2 स्वीकार करने लगता है वह अपने स्वयं के द्वारा रचे गए स्वप्नलोक, कल्पनाओं तथा परियों की दुनिया से निकलकर संसार की वास्तविकता से परिचित होने का प्रयास करता है

15 काम प्रवृत्ति का विकास :→ इस अवस्था में बालक में काम शक्ति बहुत अधिक होती है वह मुश्किल से मुश्किल कामों को स्वयं करने की कोशिश करता रहता है।

16 स्वतंत्रता :→ इस अवस्था में बच्चा माँ-बाप पर निर्भर रहना पसन्द नहीं करता वह स्वयं कार्य करना चाहता है वह हर तरह से स्वतन्त्रता चाहता है। जैसे - वह शारीरिक, मानसिक तथा सामाजिक अनुभव प्राप्त करता है, वह अनुभवों के आधार पर समाज में अपने आपको दूसरों से ताल-मेल बिठाने तथा अपनी पहचान के लिए प्रयास करता है। इस अवस्था में वह अपने आपको दुनिया से जोड़कर देखता है और अपने समस्त कार्य को खुद ही करना चाहता है।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

PAGE No
DATE / / 201

* बाल्यावस्था में शिक्षा

1. बालकों के व्यवहारों के प्रति सचेत रहना :→ बाल्यावस्था में बालक जीवन की वास्तविकताओं को समझना शुरू कर देता है वह अपने भविष्य के बारे में सोचना शुरू कर देता है तथा एक आदर्श की तलाश में रहता है यह आदर्श वह अपने माता-पिता दोस्त या अध्यापक में देखता है

2. प्रवृतियों का विकास :→ बालकों में प्रवृतियों के विकास के फलस्वरूप उनकी शैक्षिक प्रक्रिया में परिवर्तन लाने की आवश्यकता पड़ती है अतः इस प्रकार की क्रियाओं से संचालित किया जाना चाहिए

3. सामाजिक विज्ञानों का शिक्षण :→ इस अवस्था में बालक की वास्तविकताओं में अधिक रुचि रखता है अतः उसे इस अवधि में सामाजिक विज्ञानों के कुछ पहलों का अध्ययन भी करवाया जाना चाहिए। विशेषकर इतिहास, भूगोल तथा सामाजिक अध्ययन

4. भाषा के ज्ञान पर बल :→ सबसे पहले बच्चे को भाषा के ज्ञान पर बल देना चाहिए।

5. लेखन शक्ति का विकास :→ इस अवस्था के दौरान भाषा के पाठों को इस प्रकार की व्यवस्था की जानी चाहिए ताकि बालकों में लिखने की शक्ति का विकास हो

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

(7)

6 विषयों का चयन :→ इस अवस्था में बच्चों के लिए कुछ ऐसे विषयों का अध्ययन आवश्यक है जो उनकी आवश्यकता को पूरा करते हो। तथा भविष्य में उनके लाभप्रद हो। इस अवस्था में इन विषयों का चयन किया जा सकता है भाषा, गणित, सामाजिक अध्ययन, ड्राइंग, विज्ञान, चित्र कला इत्यादि।

7 क्रिया एवं खेल द्वारा शिक्षा !→ कुछ बच्चे क्रिया द्वारा सीखते हैं और कुछ बच्चे ऐसे होते हैं जो खेल द्वारा सीखते हैं

8 मानसिक व्यायाम :→ इस अवस्था में बच्चों को पुस्तकीय ज्ञान पर अधिक ध्यान नहीं दिया जाना चाहिए। बालक करके सीखना पद्धति के अन्तर्गत अधिक से अधिक सीखें

निष्कर्ष :→ अतः हम कह सकते हैं कि शैशवावस्था के पश्चात बच्चा जिस अवस्था में प्रवेश करता है उसे बाल्यकाल कहते हैं परन्तु आज तक इस संसार में कोई भी व्यक्ति विद्वान, मनोवैज्ञानिक या वैज्ञानिक नहीं हुआ है जो यह बता सके कि आज या इस सप्ताह या फिर इस महीने में यह बच्चा शैशवकाल से बाल्यकाल में प्रवेश करेगा। यह अवस्था बड़ी ही नाजुक होती है। इस अवस्था में बच्चा अपने वातावरण को समझते हुए उससे सांमजस्य स्थापित करने का प्रयास करता है।

①

childhood and growing up

Q. समाज में बढ़ते हुए आक्रमण व्यवहार के क्या-क्या कारण हो सकते हैं? प्रमुख कारणों का वर्णन करें। आक्रामक व्यवहार के नियन्त्रण के लिए आप क्या करेंगे।

Ans आक्रामकता : → आक्रामकता शब्द एक प्रकार की समस्या का प्रतिनिधित्व करता है तथा यह शब्द सार्वभौमिक है। इस शब्द का अर्थ समझना अति आवश्यक है। आक्रामकता एक ऐसा व्यवहार है जो दूसरे को हानि या क्षति पहुँचाता है। आक्रामक व्यवहार सदा जीवित प्राणियों के प्रति ही होता है। हम सभी के व्यवहार में आक्रामकता की कुछ न कुछ मात्रा अवश्य पाई जाती है।

परिभाषाएँ : →

* आरनोल्ड बास : → आक्रामकता एक ऐसा व्यवहार है जो दूसरों को हानि या क्षति पहुँचाता है।

बार्वेल और कूपर : → आक्रामकता वह व्यवहार है जिसका उद्देश्य लक्ष्य को हानि पहुँचाना है।

शनीडर के अनुसार : → दूसरे व्यक्ति के प्रति किये गए नुकसान का प्रयास।

समाज में बढ़ते हुए आक्रामकता के कारण

परिस्थिति जन्य कारक
1. कुंठा
2. प्रतिलपण
3. आक्रमण
4. हथियार
5. मादक पदार्थों का प्रभाव
6

व्यक्तिगत कारक
1. संवेगात्मक स्थिति
2. आयु
3. लिंग
4. व्यक्तित्व
5. वंशानुक्रम

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

1. कुंठा → मनोविज्ञान के सन्दर्भ में कुंठा एक प्रमुख भावनात्मक प्रतिक्रिया है जो व्यक्ति की इच्छाओं के अपूर्ण होने के अपेक्षित प्रतिरोध के कारण पैदा होता है। जब हम किसी चीज को प्राप्त करने का प्रयास करते हैं, लेकिन हम प्रयास में असफल हो जाते हैं तो कुंठा का अनुभव करते हैं।

2. प्रतिरूपण :→ प्रतिरूपण भी आक्रामकता को उकसाती है। कई बार कोई व्यक्ति स्वयं को एक मॉडल के रूप में प्रस्तुत करता है जीव-विज्ञान में प्रतिरूपण, आनुवंशिक रूप से समान प्राणियों की जनसंख्या उत्पन्न करने की प्रक्रिया है,

3. आक्रमण :- कई बार प्रत्यक्ष रूप से उकसाने पर आक्रामकता उत्पन्न होती है अनेक परिस्थितियों में शारीरिक या शाब्दिक आक्रमण आक्रामक व्यवहार को उकसाती है। आक्रामकता से क्रोध और क्रोध से आक्रामक अनुक्रिया पैदा होती है।

4. हथियार :→ एक अध्ययन में यह भी पाया गया है की जब किसी कुंठित व्यक्ति को कोई हथियार दिखाई पड़ जाये तो उसके आक्रामकता व्यवहार की सम्भावना बढ़ जाती है। मनोवैज्ञानिक के अनुसार कुंठा तथा उकसाहट के बाद हथियार का प्रत्यक्षीकरण व्यक्ति को दंगों के बारे में सोचने के लिए तत्पर कर देता है।

5. मादक पदार्थों का प्रभाव :→ जब कुछ व्यक्ति मादक पदार्थों का सेवन करता है तो उसमें आक्रामकता बढ़ जाती है उनका सेवन करने के बाद व्यक्ति में क्रियाशीलता तथा शक्ति अस्थायी रूप से बढ़ जाती है

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

(3)

3 व्यक्तिगत कारक :→

1. संवेगात्मक स्थिति :→ कुंठा की प्रबलता जैसे लक्ष्य के निकट पहुंच जाते हैं इसके अधिक कुंठा का अनुभव करते हैं कुंठा का मनमानापन अर्थात किसी व्यक्ति को प्रदान की गई कुंठा यदि तार्किक, आकस्मिक या वैध है तो वह कम शत्रुता की भावना का प्रदर्शन करेगा।

2. आयु :→ अनेक शोधों से यह पता चलता है कि आयु के साथ-2 आक्रमता के स्तर में भी छोटी आयु में आक्रमता का स्तर ऊँचा होता है परन्तु धीरे-2 बच्चे के आक्रामक व्यवहार में कमी आने लगती है।

3. लिंग :→ कुछ शोधकर्ताओं ने लिंग और आक्रमता में सम्बन्ध ढूंढने का प्रयास किया है स्त्री की अपेक्षा पुरुष में अधिक आक्रमता होती है कुछ परिस्थितियों में पुरुष की अपेक्षा स्त्री में अधिक आक्रमकता होती है

4 व्यक्तित्व :→ कुछ व्यक्ति अधिक आक्रामक होते हैं तथा कुछ व्यक्ति में कम होती है सामाजिक स्वीकृति आवश्यकता और आक्रमता के बीच महत्वपूर्ण सम्बन्ध पाया जाता है। जिन व्यक्ति में सामाजिक स्वीकृति की आवश्यकता अधिक होती है उनमें आक्रमता कम होती है।

5 वंशानुक्रम :→ वंशानुक्रम और आक्रमकता में धनात्मक सम्बन्ध पाया गया है। अनेक शोधों से यह स्पष्ट हुआ है कि जिन व्यक्तियों में एक से अधिक क्रोमोसोम होता है वह व्यक्ति हिंसात्मक व्यवहार करने लगता है। आक्रमकता का कारण बाहरी वातावरण में न होकर व्यक्ति में ही निहित है

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

(4)

आक्रामकता को रोकथाम व नियंत्रण

1. दण्ड
2. रेचन क्रिया
3. सामाजिक कौशलों में प्रशिक्षण
4. पीड़ित व्यक्ति द्वारा क्रोध की अभिव्यक्ति
5. गैर आक्रामक प्रतिक्रियों का प्रदर्शन
6. पुरस्कार आदि न देना
7. विमानवीकरण को रोकना
8. प्रतिकार
9. आक्रामक व्यवहार की परिस्थिति हटाना

1. दण्ड :→ दण्ड विधि बहुत ही पुरानी एवं परम्परागत विधि है। आक्रामक व्यवहार पर नियंत्रण करना आवश्यक है। दण्ड की तीव्रता आक्रामक व्यवहार की गम्भीरता पर निर्भर करती है। आक्रामक व्यवहार जितना गंभीर हो, दण्ड भी उसी के अनुसार होना चाहिए।

2. रेचन क्रिया :→ यह एक प्रभावी विधि मानी जाती है। अरस्तू ने भी इसके महत्व की ओर संकेत किया था। इस विधि के अन्तर्गत आक्रामक ऊर्जा को मुक्त किया जाता है। जैसे खेल-कूद, व्यायाम फिल्मों में हिंसक दृश्यों को देखना।

3. सामाजिक कौशलों में प्रशिक्षण :→ जिन व्यक्तियों के पास आक्रामक व्यवहार का सामना करने का कौशल नहीं होता वे जल्द ही आक्रामक परिस्थितियों में फंस जाते हैं जो अपनी इच्छाएं अभिव्यक्त नहीं कर पाते या दूसरों के वेग को नहीं रोक पाते, वे दूसरों को अपनी बातों से प्रभावित कर देते हैं।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

4. पीड़ित व्यक्ति द्वारा कष्ट की अभिव्यक्ति :→ मनोवैज्ञानिकों ने उस बात का भी पता लगाने का प्रयास किया है कि क्या आक्रामक व्यक्ति पीड़ित व्यक्ति पर क्रोधित होता है या नहीं। यदि आक्रामक व्यक्ति पीड़ित व्यक्ति पर क्रोधित हो रहा है तो पीड़ा संकेतों को प्राप्त करके उसकी आक्रामकता एक सीमा घटती जाती है।

5. गैर आक्रामक प्रतिरूपों का प्रदर्शन :→ यदि आक्रामता वाली परिस्थितियों में गैर आक्रामक प्रतिरूपों को स्थापित कर दिया जाये तो उनमें उत्तेजित व्यक्ति की आक्रामता में कमी आ जाती है और व्यक्ति स्वयं पर नियंत्रण कर लेता है।

6. पुरस्कार आदि न देना :→ आक्रामक व्यवहार करने वाले व्यक्तियों की ना तो प्रशंसा की जाए और न ही किसी प्रकार का पुरस्कार या प्रोत्साहन दिया जाए।

7. विमानवीकरण को रोकना :→ समाज में मानवीय गुणों की महत्व कम होती जा रही है व्यक्ति व्यक्ति को नहीं पहचानता। व्यक्ति समाज में एक वस्तु बनकर रह गया है हम अनेक प्रयास करने चाहिए जिससे विमानवीकरण को रोका जा सके और आक्रामकता को कम किया जा सके।

8. आक्रामक व्यवहार की परिस्थिति हटाना :→ आक्रामक व्यवहार करने वाली कोई परिस्थिति स्पष्ट दिखाई दे रही है तो उस परिस्थिति को तुरन्त हटा दिया जाता है।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

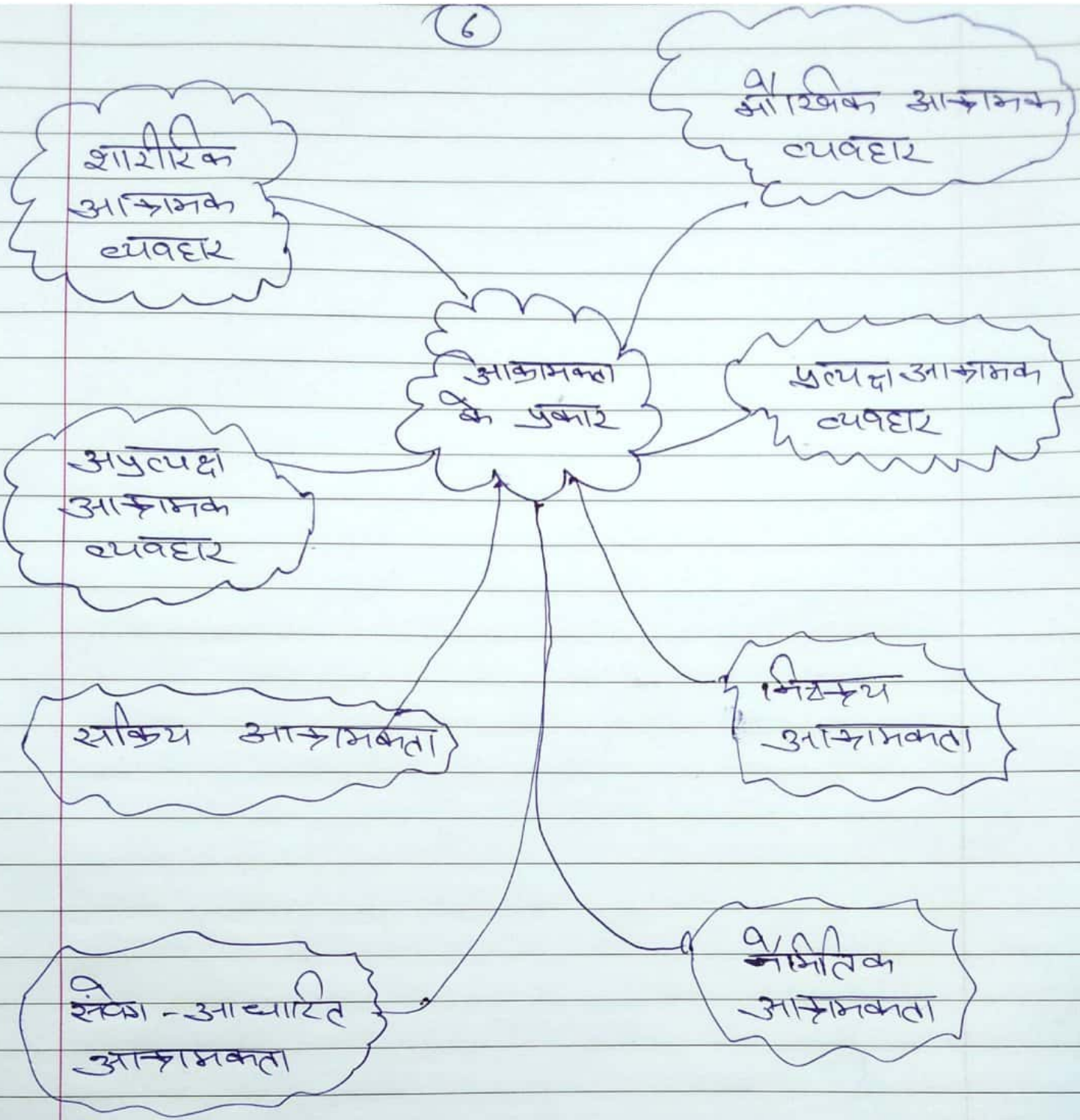

निष्कर्ष :-

अतः हम कह सकते हैं कि आक्रामकता पर नियंत्रण किया जा सकता है. कुछ व्यक्ति में ये अधिक होती है कुछ व्यक्तियों में कम होती है लेकिन हमें चाहे तो उस पर नियन्त्रण कर सकते है।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner